RISHI VISHWAMITRA VIDYA FOUNDATION

ऋग्वेद प्रथम मन्त्र
विस्तृत व्याख्या एवं व्याकरणिक विश्लेषण

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

प्रस्तुतकर्ता

Acharya Kapil (आचार्य कपिल)

सम्पर्क सूत्र: 8756390767

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

प्रस्तुत गद्यांश ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र **"अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥"** पर लिखे गए आचार्य सायण के भाष्य का एक अत्यंत शास्त्रीय अंश है। इसमें वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति (Etymology) के लिए **यास्क मुनि के 'निरुक्त'** और शब्दों की सिद्धि तथा उनके वैदिक स्वरों (Accents) के लिए **महर्षि पाणिनि की 'अष्टाध्यायी'** के सूत्रों का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है।

नीचे इस सम्पूर्ण मन्त्र की विस्तृत व्याख्या और व्याकरणिक विश्लेषण सरल हिंदी में प्रस्तुत है:

१. निरुक्त के अनुसार वैदिक शब्दों का निर्वचन (Etymology)

> "केनचिद्वृत्तिसामान्येनाविद्यमाने सामान्येऽप्यक्षरवर्णसामान्यान्निर्ब्रूयान्नत्वेव न निर्ब्रूयात्।"

व्याख्या: यास्क मुनि का स्पष्ट निर्देश है कि किसी भी वैदिक शब्द (जैसे अग्नि आदि) को बिना उसकी व्युत्पत्ति बताए नहीं छोड़ना चाहिए। निर्वचन की प्रक्रिया इस प्रकार होनी चाहिए:

- **व्याकरणिक सामर्थ्य:** सबसे पहले शब्द के अर्थ को धातु (Root) और प्रत्यय (Suffix) के आधार पर सिद्ध करने का प्रयास करें, जिसमें स्वर (उदात्त आदि) और संस्कार (प्रत्यय आदि) व्याकरण के अनुकूल हों। (जैसे: 'अग्नि' शब्द 'अग्' गति धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'आगे ले जाने वाला')।
- **क्रिया (वृत्ति) के आधार पर:** यदि व्याकरणिक नियमों से सीधा अर्थ न निकले (अप्रादेशिक विकार हो), तो शब्द के अर्थ को उसकी **क्रिया या गुण की समानता** के आधार पर सिद्ध करना चाहिए।
- **अक्षर या वर्ण की समानता:** यदि क्रिया से भी अर्थ स्पष्ट न हो, तो केवल **अक्षरों (Syllables)** या **वर्णों (Letters)** की समानता के आधार पर अर्थ निकालना चाहिए।
  - **स्थौलाष्ठीवि का मत (अक्षर साम्य):** ये 'अक्नोपन' (न भीगने वाला) शब्द के प्रथम अक्षर 'अ' और अग्नि के प्रथम अक्षर 'अ' की समानता से निर्वचन करते हैं।
  - **शाकपूणि का मत (वर्ण साम्य):** ये 'दग्ध' शब्द के 'ग्' वर्ण और अग्नि शब्द के 'ग्' वर्ण की समानता से निर्वचन करते हैं।

२. ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र का पद-शः व्याकरण और स्वर-प्रक्रिया

महर्षि पाणिनि के व्याकरण सूत्रों का उपयोग करते हुए मन्त्र के प्रत्येक शब्द की सिद्धि और उनके वैदिक स्वरों (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, प्रचय) को नीचे स्पष्ट किया गया है:

- **ईळे (Ile - स्तुति करता हूँ):**
  - **नियम:** यह एक तिङन्त (क्रिया) पद है। पाणिनीय सूत्र (पा.सू. ८.१.२८ 'तिङ्ङतिङः') के अनुसार, चूँकि यह अतिङन्त पद ('अग्नि') के ठीक बाद आया है, इसलिए यह सम्पूर्ण पद निघात यानी **अनुदात्त** (Accentless) हो जाता है।
  - **संहिता (संधि) स्वर:** जब दो शब्दों को मिलाकर पढ़ा जाता है, तो सूत्र (८.४.६६) से 'ई' कार **स्वरित** हो जाता है और उसके बाद आने वाला 'ए' कार सूत्र (१.२.३९) से 'प्रचय' (एकश्रुति) बन जाता है।
- **पुरोहितम् (Purohitam):**
  - **नियम:** 'पुरस्' शब्द अन्तोदात्त (अंतिम स्वर उदात्त) है। 'धा' धातु से 'क्त' प्रत्यय होकर 'हित' शब्द बनता है, जो सूत्र (७.४.४२) से अन्तोदात्त है।
  - **समास होने पर:** सूत्र (६.२.२ 'तत्पुरुषे तुल्यार्थ...') या गति-संज्ञा सूत्र (६.२.४९) के कारण यहाँ **पूर्वपद प्रकृति स्वर** रहता है। परिणामतः इसका 'ओ' कार उदात्त हो जाता है।
- **यज्ञम् (Yajnam):**
  - **नियम:** 'यज्' धातु में 'नङ्' प्रत्यय लगने से (३.३.९०) 'यज्ञ' शब्द बनता है। प्रत्यय के प्रभाव से यह **अन्तोदात्त** है। विभक्ति लगने के पश्चात् शेष भाग में अनुदात्त और स्वरित का नियम लागू होता है।
- **देवम् (Devam):**
  - **नियम:** यह पचादिगण का शब्द है, जिसमें 'अच्' प्रत्यय (३.१.१३४) लगा है।
  - **स्वर:** यह फिट्-स्वर, प्रत्यय-स्वर (३.१.३) अथवा चित्-स्वर (६.१.१६३) के कारण **अन्तोदात्त** है।
- **ऋत्विजम् (Rtvijam - ऋतुओं में यजन करने वाला):**
  - **नियम:** "ऋतौ यजति" इस विग्रह में 'ऋत्विग्दधृक्...' सूत्र (३.२.५९) से निपातन द्वारा इसकी सिद्धि होती है।
  - **स्वर:** 'गतिकारकोपपदात्कृत्' सूत्र (६.२.१३९) से कृदुत्तरपद प्रकृति स्वर के कारण यह **अन्तोदात्त** है।
- **होतारम् (Hotaram - देवों को बुलाने वाला / आहुति देने वाला):**
  - **नियम:** 'हु' (दान / हवन) धातु में 'तृन्' प्रत्यय (३.२.१३५) लगा है।
  - **स्वर:** क्योंकि प्रत्यय 'नित्' (न् की इत्संज्ञा) है, इसलिए सूत्र (६.१.१९७) के अनुसार यह **आद्युदात्त** (पहला स्वर उदात्त) है।

- **रत्नधातमम् (Ratnadhatamam - रत्नों (कर्मफलों) को सर्वाधिक धारण कराने वाला):**
  - **नियम:** 'रत्न' शब्द फिट् सूत्र (२६) से आद्युदात्त है। 'रत्नानि दधाति' विग्रह से समास होने पर 'रत्नधा' अन्तोदात्त बन जाता है।
  - **स्वर:** जब इसमें अतिशय अर्थ में 'तमप्' प्रत्यय (५.३.५५) लगता है, तो 'पित्' (प् की इत्संज्ञा) होने के कारण सूत्र (३.१.४) से प्रत्यय अनुदात्त हो जाता है और शेष में स्वरित-प्रचय प्रक्रिया लागू होती है।

निष्कर्ष (उपसंहार)

> "वेदावतार अद्याया ऋचोऽर्थश्च प्रपञ्चितः । विज्ञातं वेदगाम्भीर्यमथ संक्षिप्य वर्ण्यते ।।"

भावार्थ: इस प्रकार वेदों के प्राकट्य (अवतार) स्वरूप, ऋग्वेद की प्रथम ऋचा (मन्त्र) के अर्थ और उसकी जटिल व्याकरणिक-प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन (प्रपञ्चित) किया गया है। इससे वेदों के शब्दों और उनके उच्चारण (स्वरों) का गाम्भीर्य (गहराई) ज्ञात होता है। इसी आधार पर आगे के मन्त्रों का संक्षेप में वर्णन किया जाएगा।

यह व्याख्या इस बात का प्रमाण है कि वैदिक शब्दों का अर्थ केवल अनुवाद नहीं है, बल्कि प्रत्येक शब्द के निर्माण और उसके उच्चारण (स्वर) के पीछे एक अकाट्य और वैज्ञानिक व्याकरणिक व्यवस्था काम करती है।